# एकाधिकार प्रतियोगिता

Dr. Amitendra Singh
Economics Department
Govt. Girls PG College ,RJPM Lucknow
E mail-amitendra82@gmail.com.in

# एकाधिकार प्रतियोगिता

- एकाधिकारी का अर्थ एवं विशेषताएं
- एकाधिकारी के अन्तर्गत मॉग व पूर्ति वक्र
- एकाधिकारी के अन्तर्गत संस्थिति व मूल्य निर्धारण
- अल्पकाल में एकाधिकारी का सन्तुलन विश्लेषण
- दीर्घकाल में एकाधिकारी का सन्तुलन निर्धारण
- एकाधिकार एवं पूर्ण प्रतियोगिता में तुलना

# एकाधिकारी का अर्थ एवं विशेषताएं

- एकाधिकारी का अंग्रेजी शब्द 'Monopoly' दो शब्दों 'Mono' और Poly से मिलकर बना है। Mono का अर्थ है - अकेला, तथा Poly का अर्थ है - विक्रेता। अतः Monopoly का शाब्दिक अर्थ है- अकेला विक्रेता अथवा एकाधिकार। जब किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन तथा विक्रय पर किसी एक व्यक्ति अथवा फर्म का पूर्ण अधिकार रहता है तो इसे एकाधिकारी की स्थिति कहते हैं।
- 1.वस्तु का एक विक्रेता हो या उसका उत्पादन केवल एक फर्म द्वारा हो। अर्थात् फर्म तथा उद्योग एक ही होते हैं।
- 2.वस्तु के कोई निकट स्थानापत्र वस्तु न हो, क्योंकि यदि कोई नजदीकी स्थानापन्न हुआ तो प्रतियोगिता की स्थिति आ जाएगी और वस्तु की पूर्ति पर उत्पादक का पूर्ण नियंत्रण नहीं होगा।
- 3.उद्योग में नए उत्पादकों के प्रवेश के प्रति प्रभावपूर्ण रूकावटे हों। अर्थात एकाधिकारी के क्षेत्र में फर्मे स्वतंत्र रूप से आ जो नहीं सकती।

- एकाधिकारी की स्थिति में केवल एक ही उत्पादक या विक्रेता होता है।
- एक विक्रेता होने के फलस्वरूप पूर्ति के ऊपर विक्रेता का पूर्ण नियंत्रण होता है। वह पूर्ति की घटा-बढ़ाकर वस्तु की कीमत को प्रभावित कर सकता है। अर्थात एकाधिकारी की अपनी मूल्य नीति होती है।
- एकाधिकारी द्वारा उत्पादित वस्तु की कोई दूसरी वस्तु नजदीक स्थानापन्न नहीं होती है। दूसरो शब्दों में एकाधिकारी फर्म द्वारा उत्पादित वस्तु एवं बाजार में बेंची जाने वाली अन्य वस्तुओं के बीच माँग की तिर्यक लोच शून्य होती है।
- एकाधिकार में एक ही फर्म होती है जो उत्पादन करती है। अर्थात फर्म ही उद्योग है। स्पष्ट है कि एकाधिकार में फर्म तथा उद्योग में अन्तर नही रहता।
- एकाधिकारी उद्योग में अन्य फर्मों की प्रविष्टि नहीं हो सकती है।
- एकाधिकारी की स्थिति में मूल्य विभेद सम्भव हो सकता है। अर्थात एकाधिकारी ऐसी स्थिति में होता है जो कि अपनी उत्पादित वस्तु की विभिन्न इकाईयों को अलग-अलग उपभोक्ताओं को अलग-अलग मूल्यों पर बेच सकता है।

# एकाधिकारी के अन्तर्गत माँग व पूर्ति वक्र

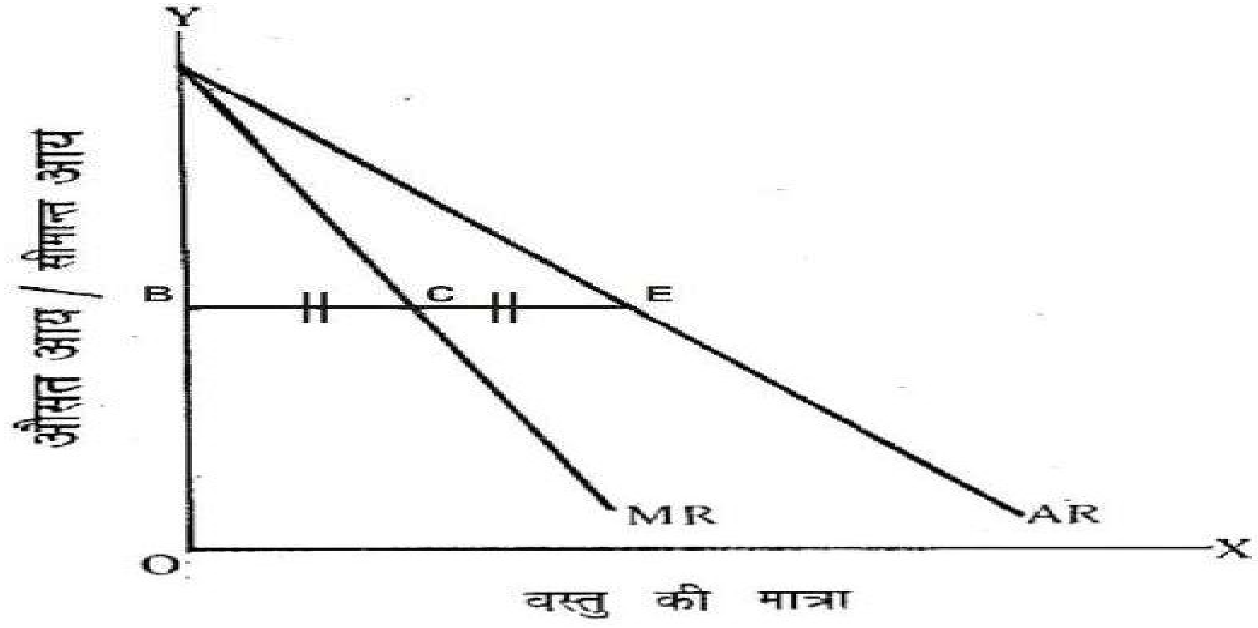

# अल्पकाल में एकाधिकारी का सन्तुलन विश्लेषण

**असामान्य लाभ (AR > AC):-.**

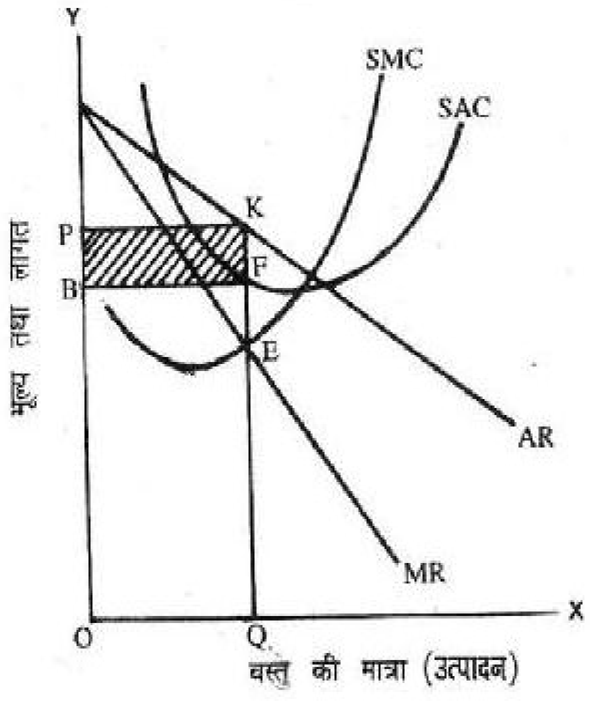


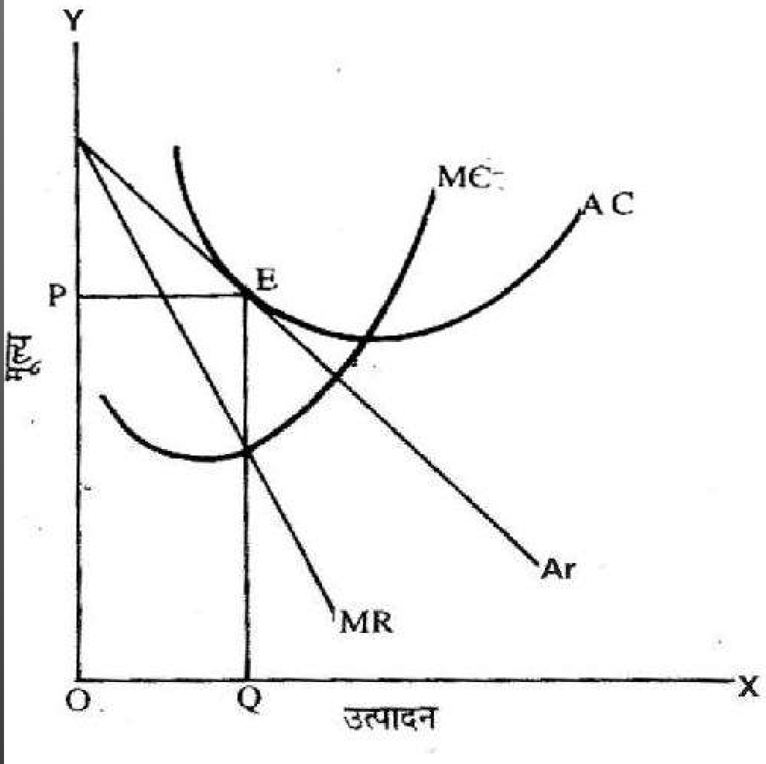

# अल्पकाल में एकाधिकारी का सन्तुलन विश्लेषण

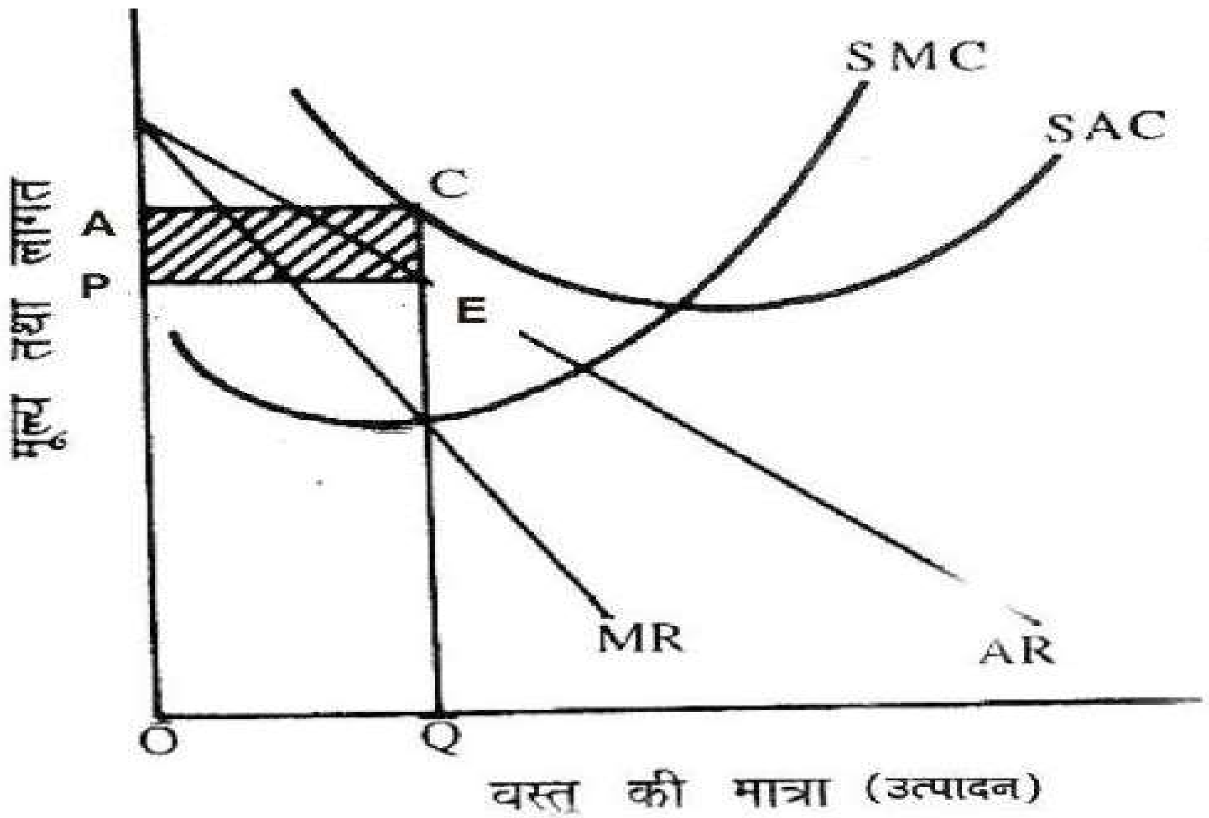

# दीर्घकाल में एकाधिकारी का सन्तुलन निर्धारण

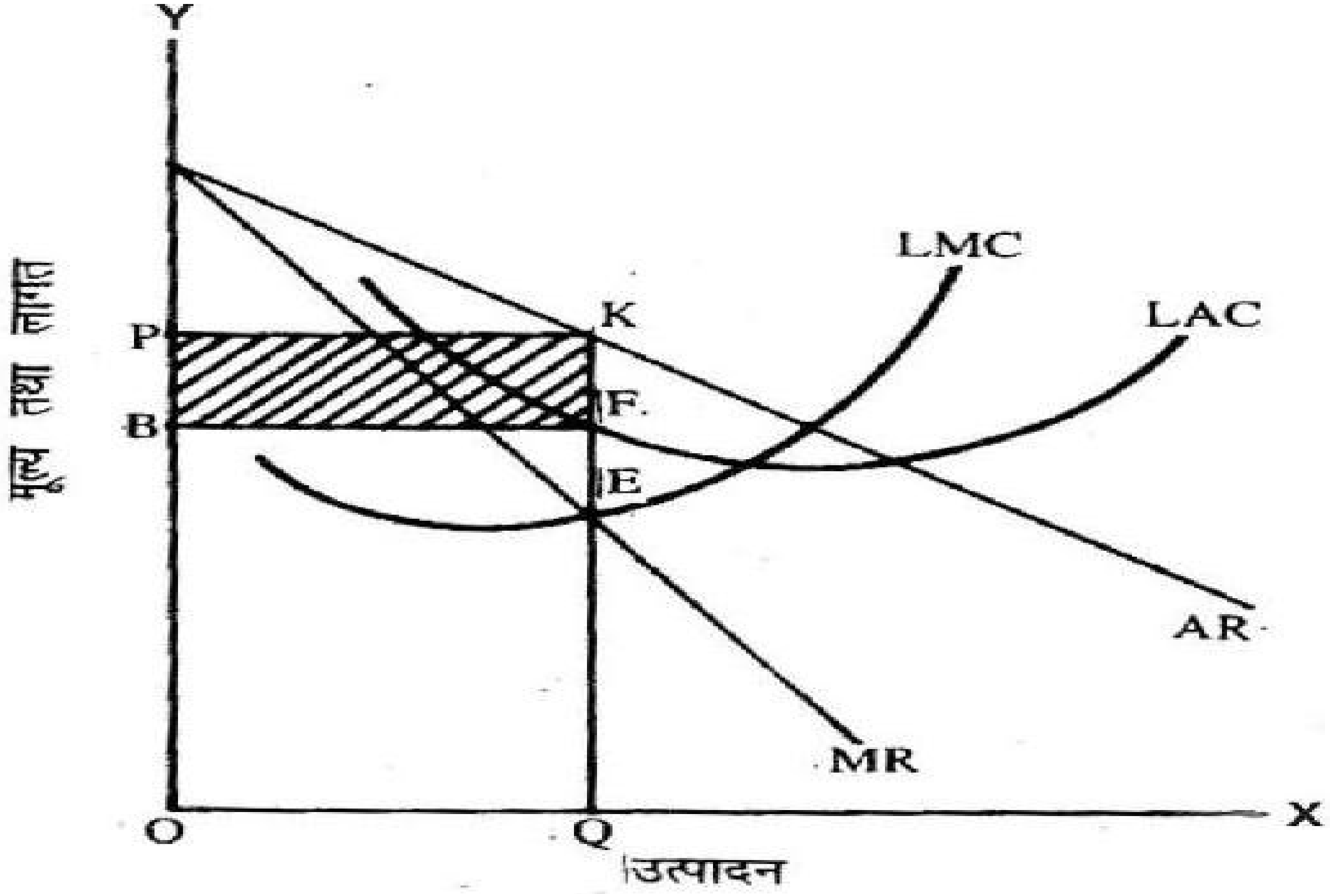

# एकाधिकार एवं पूर्ण प्रतियोगिता में तुलना

| क्र. सं. | तुलना का आधार | पूर्ण प्रतियोगिता | एकाधिकारी |
|---|---|---|---|
| 1. | फर्मों की संख्या | अपरिमित या अत्यधिक | एक |
| 2. | फर्मों का प्रवेश | स्वतंत्र प्रवेश | प्रवेश पूर्णतया वर्जित |
| 3. | वस्तु का स्वभाव | पूर्णतः सहजातीय | पूर्ण सहजातीय, नजदीकी स्थानापन्न नहीं |
| 4. | उत्पादन व मूल्य निर्धारण | केवल उत्पादन समायोजन, मूल्य निर्धारण नहीं (फर्म केवल मूल्य स्वीकारक होती है) | उत्पादन तथा मूल्य दोनों का निर्धारण |
| 5. | आय वक्र का स्वरूप,ARवMR के मध्य सम्बन्ध | AR तथा MR आधार अक्ष के समान्तर होते हैं तथा AR, MR तथा लोच (e) के मध्य कोई संबंध नहीं | AR तथा MR नीचे गिरते हुए होते हैं। AR, MR तथा E के मध्य सम्बन्ध |
| 6. | पूर्ति वक्र व लागत वक्र का स्वरूप | पूर्ति वक्र निर्धार्य तथा अल्पकाल में MC से सम्बन्धित होती है। जबकि लागत वक्र U आकार का होता है। | पूर्ति वक्र MC से सम्बन्धित नहीं तथा अनिर्धार्य, लागत वक्र U आकार में है। |
| 7. | संस्थिति की स्थिति | दीर्घकालीन संस्थिति में<br><br>AR = MR = AC= MC | दीर्घकालीन संस्थिति में MR = MC तथा AR इससे अधिक होता है। अर्थात् (MR= MC < AR) |
| 8. | लाभ की स्थिति<br><br>(i) अल्पकाल में<br><br>(ii) दीर्घकाल में | सामान्य लाभ, असामान्य लाभ तथा हानि तीनों स्थितियां संभव है।<br><br>केवल सामान्य लाभ | सामान्य लाभ, असामान्य लाभ तथा हानि तीनों स्थितियां संभव है।<br><br>केवल असामान्य लाभ |
| 9. | मूल्य तथा उत्पादन क्षमता | के न्यूनतम बिन्दु पर, निष्क्रिय उत्पादन क्षमता | दीर्घकाल में उत्पादन AC के न्यूनतम बिन्दु |